सचित्र बाल कथाएँ

माँ की सीख

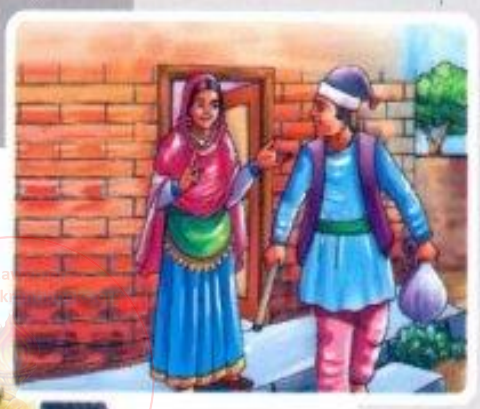

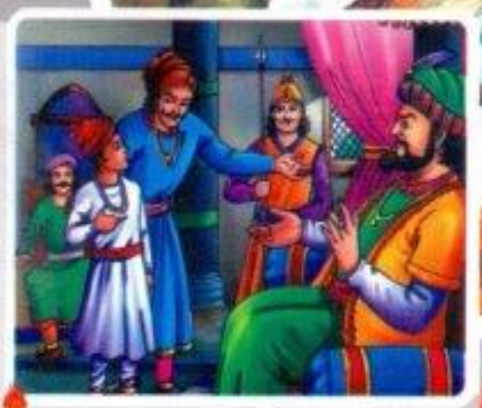

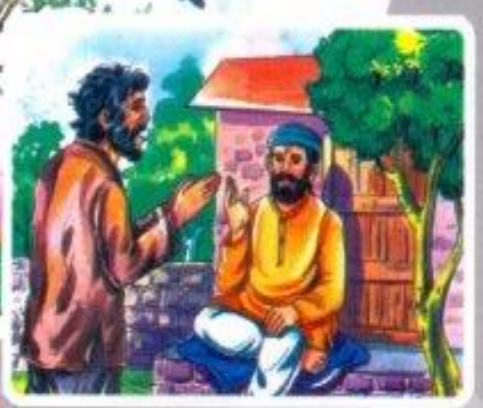

11

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

बूँद और अंगारा

एक पानी की बूँद थी और एक आग का अंगारा था। एक दिन बूँद अंगारे की ओर बढ़ी। अंगारे ने धमकाया—"बाबरी मेरे पास आएगी तो तेरा नाम-निशान भी न बचेगा।" बूँद नहीं मानी। अंगारों के ऊपर जा गिरी। अंगारे बोले—"क्यों री, अब तो तेरा नाम निशान ही मिट गया।" आकाश में से एक आवाज सुनाई दी—"नहीं अंगार, अभी तक मैं नीचे ही नीचे रहती थी पर जब से शरीर तुझे समर्पित किया ऊँची उठ गई हूँ।"

वही बूँद भाप बनकर आकाश में उड़ गई। वह ऊपर से बोली—"मैं नीचे गिरी पर उसी कारण तो ऊपर उठ पाई। समर्पण करने पर ही तो भगवान मनुष्य का सहायक होता है, सम्मान दिलाता है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले स्वयं को सुधारिए

एक कौआ एक पेड़ पर घोंसला बनाकर रहता था। एक दिन कौआ अपना घोंसला छोड़कर पूरब की ओर जाने की तैयारी करने लगा। कारण पूछने पर बुलबुल से उसने कहा—"यहाँ के लोगों को आवाज की परख करने की तमीज नहीं है।" बुलबुल ने कहा—"ताऊजी! आपको अपनी आवाज सुधारनी पड़ेगी। नहीं तो पूरब वालों से भी आपको यही शिकायत करनी पड़ेगी।"

अपनी आदतें अच्छी नहीं होती तो सभी जगह तिरस्कार मिलता है। अत: अपनी आदतें स्वयं ही सुधारनी चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभी से प्रेम करो

गड़रिये ने भेड़ को बड़े प्यार से कंधे से उतारा, उसे स्नान कराया, बाल सुखाए और हरी घास खाने को दी। जब भेड़ उस घास को खा रही थी, तब गड़रिये की खुशी देखते ही बनती थी। महापुरुष ईसा उस गड़रिये की कुटिया के समीप ही बैठे विश्राम कर रहे थे। उन्होंने इस प्रसन्नचित्त गड़रिये को देखकर पूछा—"वत्स! आज तुम इतने प्रसन्न क्यों हो रहे हो?"

महात्मन्! यह भेड़ जंगल में प्रायः भटक जाती है। मेरे पास सौ और भी भेड़ें हैं पर वे सब सीधे घर आती हैं, इसे इतना प्यार इसलिए दिया कि यह फिर कहीं न भटके।

तब ईसा ने अपने शिष्यों से कहा—"जो अपनी राह से भटक गए हैं, उन मनुष्यों को प्यारपूर्वक ही सीधे मार्ग पर लाना चाहिए।"

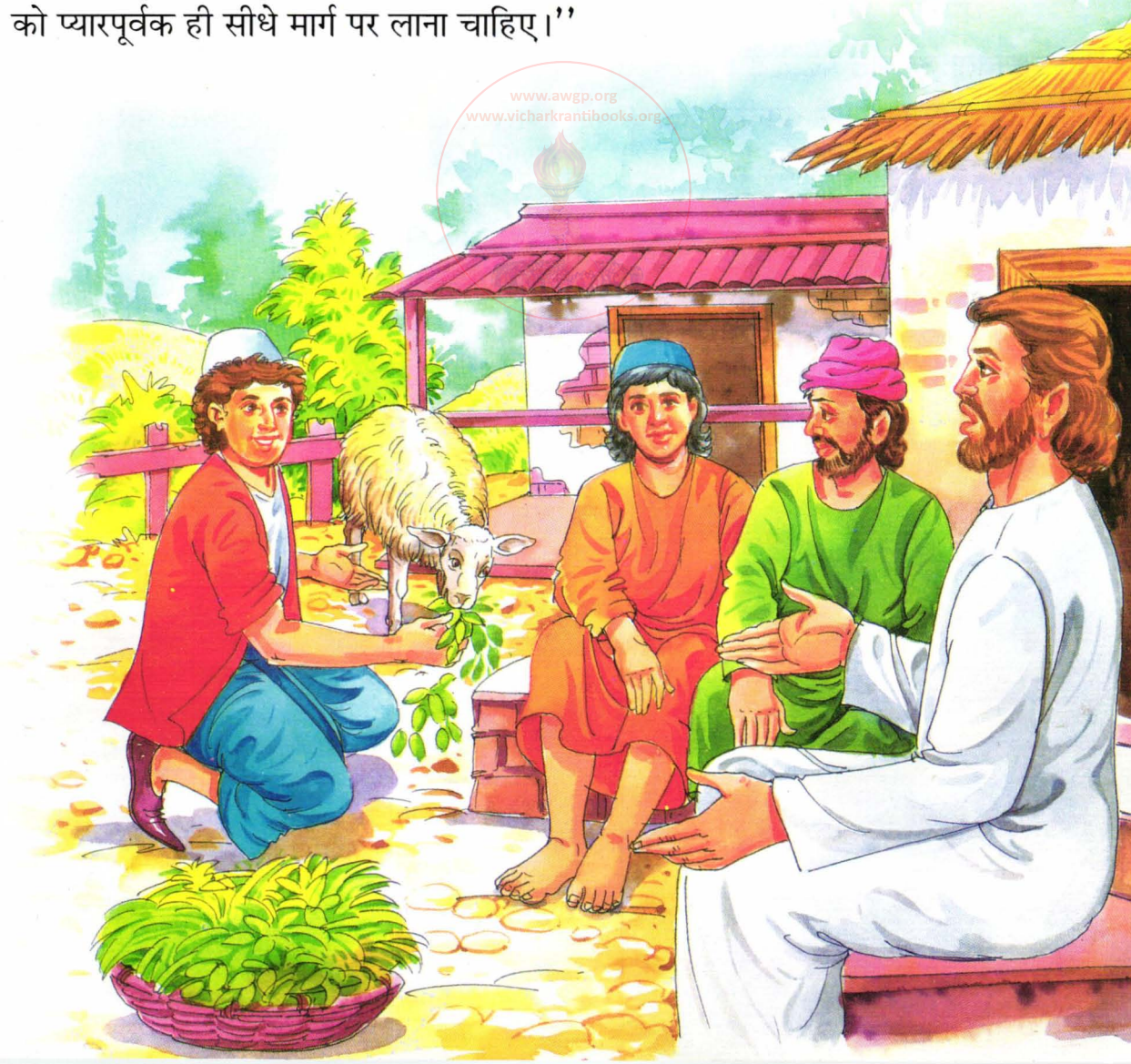

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घमंड कौन छोड़े

एक छोटी नदी थी। उस पर दूसरी पार जाने के लिए एक लट्ठा रखा था। उस पर एक ही व्यक्ति के निकलने जितनी जगह थी।

एक दिन दो बकरे, दो ओर से एक ही समय चल पड़े। वे बीच में आकर अड़ गए। दोनों में से किसी ने भी परिस्थिति देखकर पीछे हटने की बुद्धि नहीं लगाई।

अड़े सो अड़े। दोनों में से कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं हुआ। हेठी कौन कराए? घमंड कौन छोड़े? लड़ने, मरने और दूसरे को नीचा दिखाने के जोश में परस्पर टकराने लगे। छोटी ठोकरों के बाद बड़ी ठोकरें लगीं। दोनों ही नदी के प्रवाह में पड़कर मौत के मुँह में चले गए। अत्यधिक हठ और घमंड जो न कर गुजरे, सो कम ही है।

धर्म और संप्रदायों की भी यही स्थिति है। सभी धर्मों के मूल सिद्धांत समान हैं। सभी मानवता का पाठ पढ़ाते हैं। पर व्यक्ति अपनी नासमझी में धर्म-संप्रदाय के असली तत्त्व को नहीं समझते। वे अपनी मूर्खता के कारण परस्पर टकराते, शक्ति नष्ट करते और समाज को खराब बनाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोने का अंडा

एक आदमी के पास रोज एक सोने का अंडा देने वाली मुरगी थी। अंडे को बेचकर वह मजे में गुजारा चलाता। एक दिन लालच उसके सिर सवार हुआ और उसने सोचा क्यों न मुरगी का पेट चीरकर एक ही दिन में सारे अंडे निकालकर तुर्त-फुर्त मालदार बना जाए। उसने ऐसा ही किया और मुरगी का पेट चीर दिया वहाँ तो सोने के अंडे थे ही नहीं। उतावली में एक अंडा मिलने का लाभ भी हाथ से चला गया और पछताने के अतिरिक्त और कुछ हाथ न लगा।

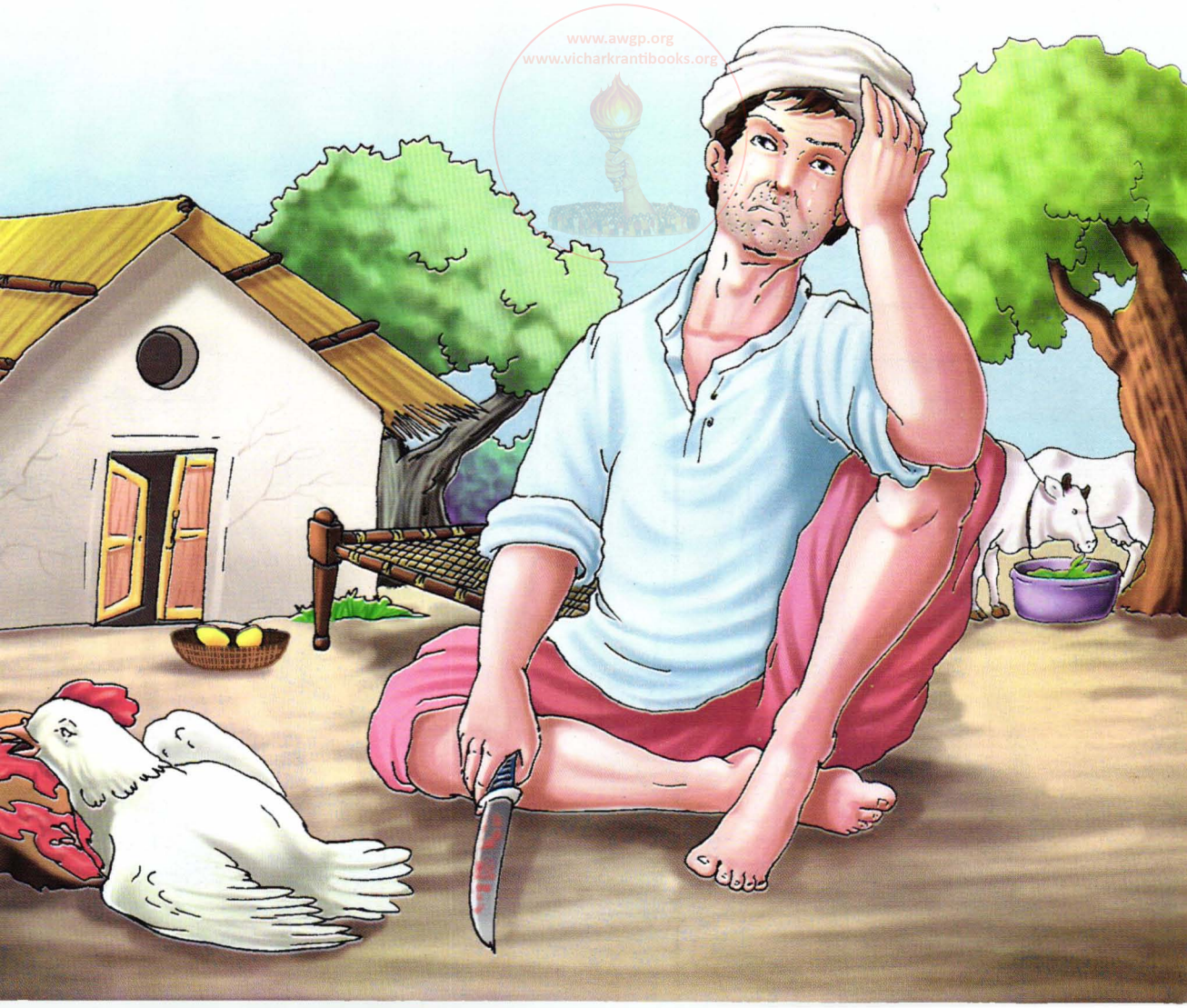

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सही रास्ते पर चलो

एक चित्रकार ने एक सुंदर बालक का चित्र बनाया। वह चित्र इतना पसंद आया कि उसकी लाखों प्रतियाँ बिक गईं। पंद्रह वर्ष के बाद वह दुष्ट व्यक्ति का एक चित्र बनाना चाहता था। कारागार जाकर एक खूंखार कैदी से बोला—''मैं तुम्हारा चित्र बनाना चाहता हूँ।'' कैदी ने पूछा—''क्यों ?'' चित्रकार ने अपना विचार बताते हुए उसे 'बालक' का चित्र दिखाया। कैदी उस चित्र को देखकर रोने लगा और बोला—''यह चित्र मेरा ही है।'' चित्रकार आश्चर्यचकित रह गया और बोला—''यह कैसे हुआ ?'' कैदी का उत्तर था—''सांसारिक आकर्षणों में भटककर अपना जीवनलक्ष्य भूलने से ऐसा हुआ है।''

कुछ व्यक्ति गलत रास्ते में चलते-चलते अच्छे लोगों के साथ रहकर अपनी बुराई छोड़कर अच्छे बन जाते हैं।

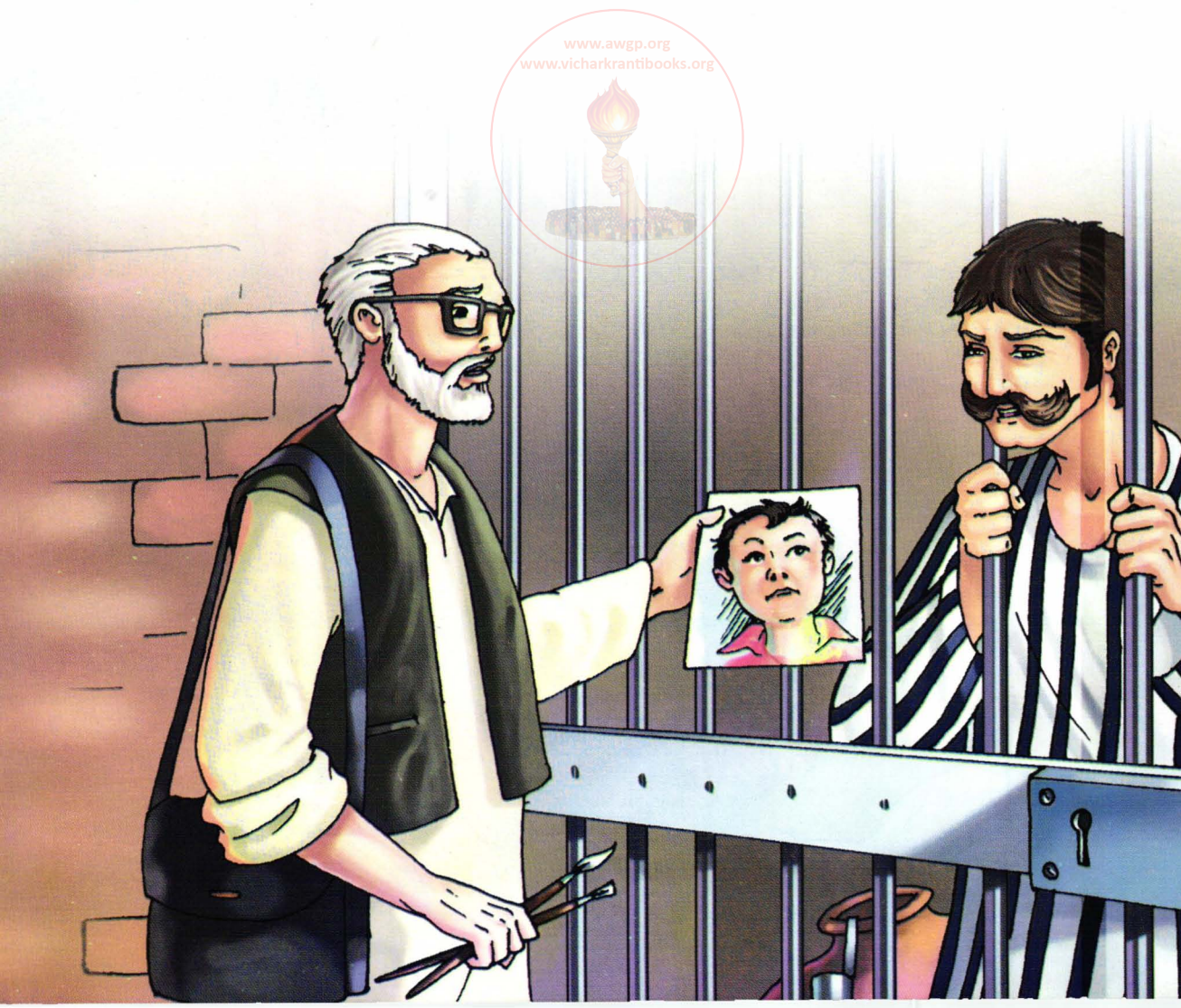

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्ची साधना

एक अनगढ़ व्यक्ति दार्शनिक अरस्तू के पास पहुँचा और ब्रह्म के बारे में जानने की इच्छा करने लगा। उसके बाल बिखरे हुए शरीर और कपड़े गंदे थे। सिर से पैर तक दृष्टि डालने के बाद उन्होंने उसे एक सुंदर सी सीख दी कहा—"नित्य कपड़े धोना और प्रतिदिन बाल सँभालना आरंभ करो। साधना कुछ और नहीं अपनी गलतियाँ सुधारते चलने का सिलसिला ही साधना कहलाता है। यही हमें परमात्मा तक पहुँचाता है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नदी और उसकी सहेली

एक दिन एक नदी की धारा बहुत दूर से आती हुई थक गई थी। अपनी सहेली से बोली—"मैं तो चलते-चलते अपने जीवन से ऊब गई हूँ। विश्राम करना चाहती हूँ पर एक क्षण को भी विश्राम नहीं, ऐसा भी जीवन किस काम का! अब तो आगे बढ़ने का मेरा इरादा नहीं है। देखो आम्र की यह सघन कुंजें कितनी शीतलता प्रदान करने वाली हैं। मैं तो इन्हीं के नीचे विश्राम करूँगी।"

और वह वहीं रुक गई। घनी छाया के निचले स्थान को जल से भरने लगी। दूसरी धारा आगे बढ़ती गई पर जाते-जाते कह गई—"तू इस बात को क्यों भूलती है कि अपने जल की पावनता, स्वच्छता और स्वस्थता बहते रहने में है और यदि तेरे जीवन में काम से जी चुराने ने स्थान बना लिया तो स्वाभाविक गुणों से भी हाथ धो बैठेगी।"

पहली धारा ने अपनी सहधारा की अनुभवजन्य बातों को सुनकर भी अनसुना कर दिया, उसकी बात पर बिलकुल भी ध्यान नहीं दिया। उसने एक सरोवर का रूप धारण कर लिया। थोड़े दिनों बाद पानी के घिरे रहने के कारण ऊपर काई की मोटी परत जम गई। पानी इतना गंदा तथा दुर्गंधयुक्त हो गया कि गाँववासियों ने उसमें अपने पशुओं को पानी पिलाना तथा कपड़े धोना तक बंद कर दिया।

जीवन में सदैव कार्य करते हुए आगे बढ़ने की आदत बनी रहती है तभी पवित्रता, स्वस्थता बनी रहती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देने वाला तो अब भी यहीं है

हातिम बहुत प्रसिद्ध और योग्य व्यक्ति थे। हातिम परदेश जाने लगे तो अपनी पत्नी से पूछ बैठे—"तुम्हारे लिए घर में खाने-पीने का कितना सामान रख जाऊँ?"

"जितनी मेरी आयु हो"—कहकर स्त्री हँस पड़ी।

"तुम्हारी आयु जानना मेरे वश की बात नहीं"—हातिम ने कहा।

"तब तो मेरी रोटी का इंतजाम भी आपके वश से बाहर है। यह काम जिसका है, उसी को करने दीजिए।" पत्नी की आस्था पर मुग्ध होकर हातिम परदेश चले गए। तब एक पड़ोसिन ने पूछा—"बेटी! हातिम तेरे लिए क्या इंतजाम कर गए हैं?" हातिम की स्त्री ने कहा—"माँ, मेरे पति क्या इंतजाम करेंगे, वे तो खाने वाले थे। खाना देने वाला तो अब भी यहीं है। हमेशा मेरे आस-पास उसकी ही सत्ता तो विद्यमान है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रम के बाद सफलता

महर्षि धन्वंतरि की पीठ पर एक घाव हो गया। उसकी दवा बनाने के लिए आश्रम के चारों ओर जड़ी-बूटियों की तलाश करने लगे। दूर-दूर तक घूमकर सैकड़ों जड़ी-बूटियों के गुण-दोष ढूँढ़ डाले। एक दिन भ्रमण कर रहे थे तो एक जड़ी बोली—''महाराज! मैं आपके रोग की औषधि हूँ।'' धन्वंतरि बोले—''इतने दिन तक क्यों नहीं बोली, मैं कितना मारा-मारा घूमता रहा।'' जड़ी बोली—''महाराज! एकाएक बिना प्रयत्न किए ही मिल जाती तो इतनी बड़ी जड़ी-बूटियों की खोज और उनके गुणों का ज्ञान प्राप्त करने का कार्य आप कैसे करते? श्रम और संघर्ष करने पर लोक-कल्याण की जो शक्ति आप को मिली है, वह आप कैसे प्राप्त करते? श्रम और संघर्ष से ही सफलता मिलती है।''

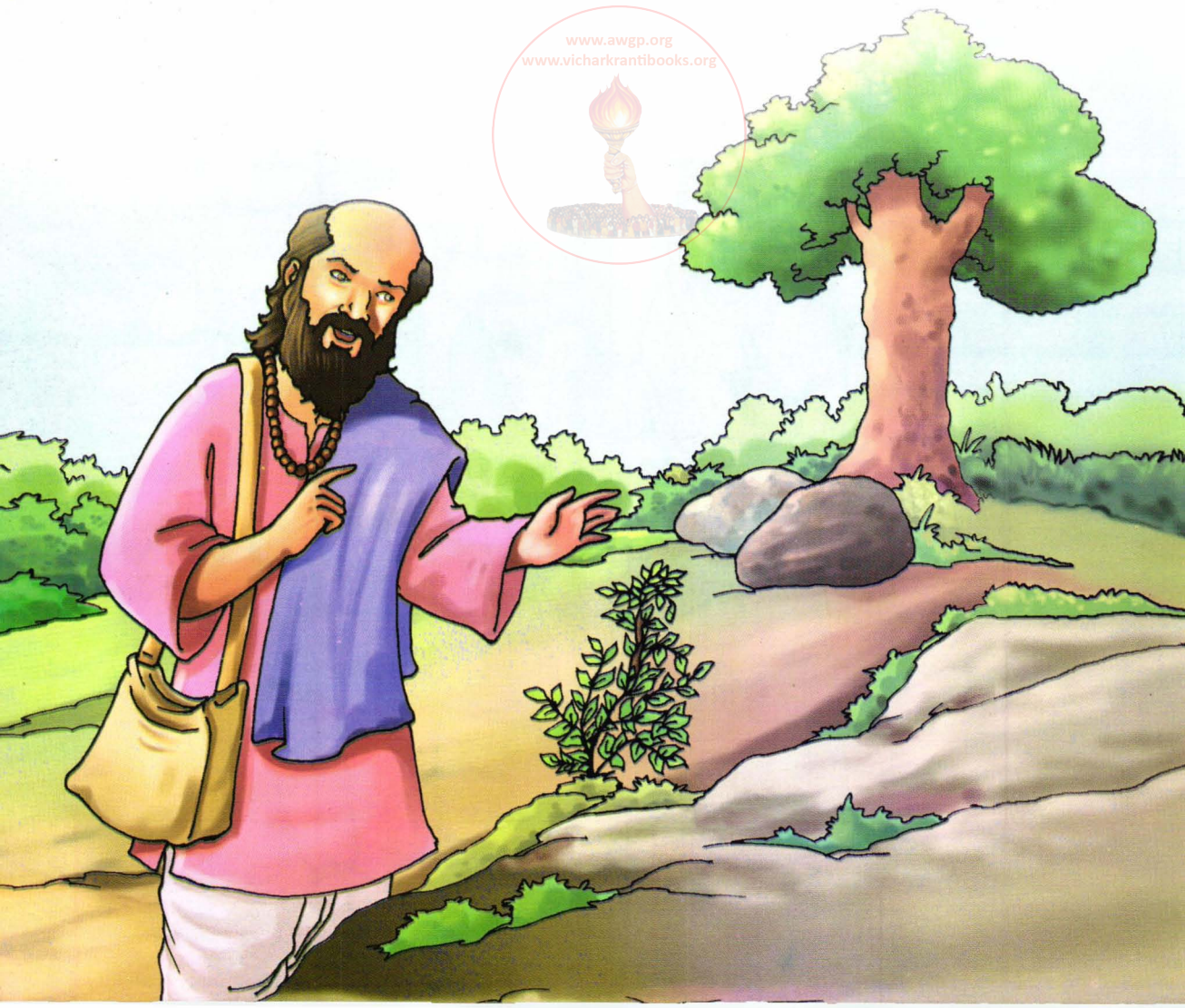

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवाजी झुके नहीं

शिवाजी के पिता शाहजी बीजापुर नवाब के दरबार में कर्मचारी थे। वे आठ वर्ष के शिवाजी को दरबार में ले गए और कहा—"बेटा! बादशाह को सलाम करो।" शिवाजी ने दो टूक मना कर दिया कि मैं जुल्म करने वाले के आगे सिर नहीं झुका सकता। नवाब ने गुस्से में देखा पर शिवाजी विचलित न हुए। वे उलटे पैर लौट आए, पर झुके नहीं।

सत्य के सामने झुकना चाहिए , असत्य के सामने नहीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घोड़ा और बाप-बेटा

एक घोड़ा लेकर बाप-बेटे कहीं जा रहे थे। बाप घोड़े पर बैठा था और बेटा पैदल चल रहा था। जिस गाँव में होकर निकले वहाँ के लोगों ने कहा—बाप का मन कैसा स्वार्थी है, खुद घोड़े पर बैठा है और लड़के को पैदल चला रहा है। लोगों की बात सुनकर बाप नीचे उतर पड़ा और बेटे को घोड़े पर बिठा दिया। अगले गाँव में लोगों ने बेटे को बुरा-भला कहा कि बूढ़ा बाप पैदल चले और बेटा घोड़े पर चढ़े यह कैसी अजब बात है ? यह सुनकर अब दोनों पैदल चलने लगे। तब अगले गाँव के लोगों ने कहा—"कैसे मूर्ख हैं ये लोग, जो घोड़ा रहने पर भी पैदल चलते हैं।" इस पर बाप-बेटे दोनों ही घोड़े

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर चढ़ लिए। इनको देखकर आगे गाँव में उन्हें निर्दयी और भारी वजन से घोड़े को मार डालने वाला बताकर निंदा करने लगे।

इसप्रकार तरह-तरह की बातें सुनकर बाप-बेटे ने सोचा—"यह दुनिया बड़ी विचित्र है। इसमें सबको प्रसन्न रख सकना संभव नहीं। इसलिए जो उचित हो उसका अपनी विवेक-बुद्धि के आधार पर निर्णय करना चाहिए और लोग क्या कहते हैं, उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिकंदर और संत

जब सिकंदर विश्व-विजय करके लौटा तो बहुत अहंकार में भरा हुआ था। भारत में उसने संतों की महत्ता व उन्हें प्राप्त सिद्धियों के विषय में खूब सुना था। जहाँ उसका डेरा लगा था, उसके समीप ही एक साधु की झोंपड़ी थी। उनकी ख्याति सुनकर वह वहाँ पहुँचा, चेहरे पर छाई तेजस्विता से प्रभावित हुआ, पर देखा कि उनके पास पहनने को न वस्त्र हैं, न रहने को ठीक स्थान। धन के गर्व में मदमस्त हो सिकंदर बोल उठा—"महाराज! आपकी मैं क्या सेवा कर सकता हूँ?" संत ने कहा—"तू क्या सहायता करेगा, मेरा तो एकमात्र आश्रयदाता परमपिता परमात्मा है। कृपा करनी ही हो तो बस इतनी करना कि मेरे लिए धूप छोड़ दे, एक ओर हट जा तू मेरी धूप रोके खड़ा है।" संत को कोई भी लालच और चाह नहीं है, यह देख संत से प्रभावित हो सिकंदर चुपचाप लौट गया।

भगवान की उपासना करने वाले को कभी कोई कमी नहीं रहती। कमी रहती भी है तो वह हँसी-हँसी जीवन काट लेता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माँ की सीख

एक राजा बड़े दानी थे। उनका नाम था रविशंकर महाराज। वे प्रतिदिन सवा मन गुड़ बाँटा करते थे। एक दिन एक बालिका को गुड़ देने लगे तो उसने लेने से इनकार कर दिया। महाराज ने पूछा कि तुम्हें गुड़ नहीं लेना क्या? बालिका बोली—"मुझे यह शिक्षा मिली है कि मेहनत करके ही कुछ लेना चाहिए।" ऐसी शिक्षा किसने दी है तुझे? महाराज ने पूछा। बालिका ने उत्तर दिया, मेरी माता ने। महाराज ने पता लगाया कि इसका घर कहाँ है? उन्हें जानकारी मिली कि एक विधवा ब्राह्मणी अपना और अपनी बच्ची का लकड़ियाँ बीनकर गुजारा करती थी। यह समाचार पाते ही महाराज ने कहा—"जिस देश की माताएँ ऐसी हों उनके बालक ऐसे ही संस्कारवान बनते हैं। अपनी मेहनत करके ही कुछ लेते हैं, मुफ्त में कुछ नहीं लेते।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधु को सबक मिला

एक साधु थे, बहुत ही कंजूस और लालची। दिनभर भिक्षा माँगते। जो मिलता उसकी अशरफियाँ बनाते जाते और इकट्ठा करते रहते। एक बार उनका मन तीर्थयात्रा का आया। अशरफियाँ साथ थीं, सो डर लगा रहता कि कोई रास्ते में छीन न ले। एक उपाय सूझा। गंगा की रेती में गड्ढा बनाकर अशरफियाँ गाड़ दीं और पास में गोल पत्थर ढूँढ़कर शंकर जी बनाकर स्थापित कर दिए। ऊपर से फल-फूल चढ़ा दिए। इस प्रकार निश्चिंत होकर आगे बढ़े।

चौथे दिन सोमवती पर्व था। नहाने को भारी भीड़ एकत्रित हुई। एक ने शिवलिंग स्थापित देखा तो सभी उस सस्ती पूजा की नकल करने लगे। सैकड़ों ने अपने-अपने शिवलिंग स्थापित कर दिए। साधु जब लौटकर आए तो सैकड़ों शिवलिंग देखकर आश्चर्य में पड़ गए। दिन में सबको उखाड़-उखाड़ देखना धर्म विरुद्ध था। रात को उखाड़कर देखा, तो कुछ पता न चला कि अशरफियाँ कहाँ हैं?

साधु अंत में निराश वापस लौटे। उन्होंने जब एकांत में मनन-चिंतन किया तो अपने व्यवहार पर क्षोभ भी हुआ। जब वे साधु बन ही गए तो फिर इतना धन इकट्ठा करने की जरूरत ही क्या थी? यह तो उन्हें दीन-दुखियों की सेवा में लगा देना था। उन्होंने सोचा-अच्छा हुआ ईश्वर ने इस संकीर्ण मनोवृत्ति बदलने को उन्हें सबक सिखाया।

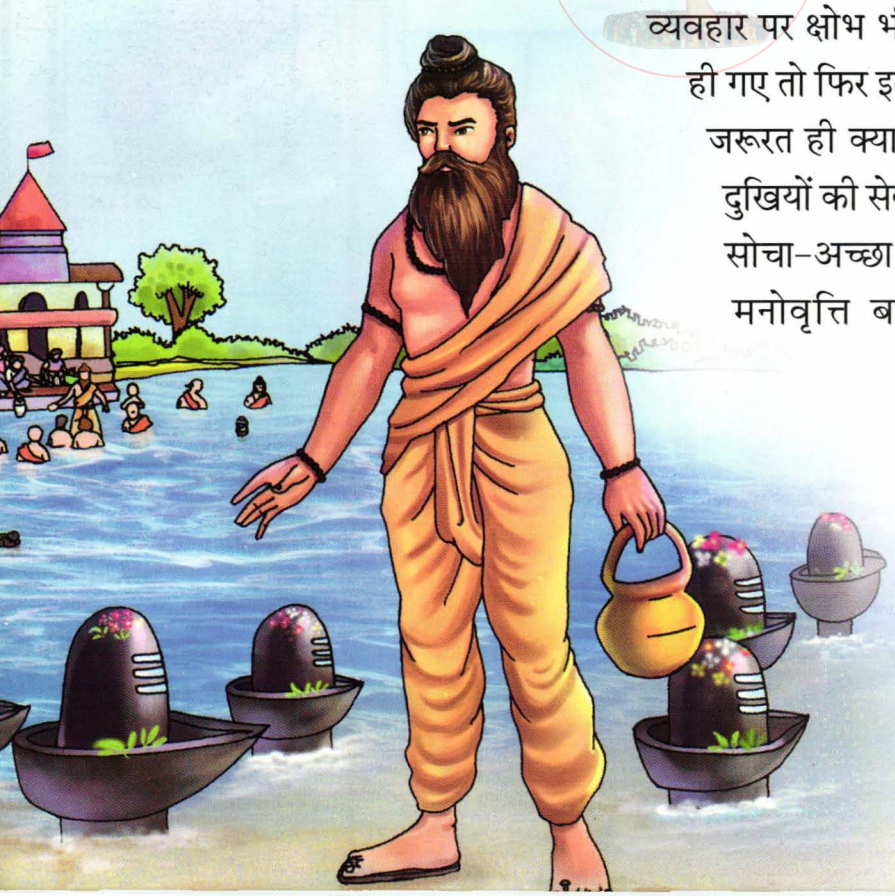

अब वे उतनी ही भिक्षा माँगते जितनी रोज की जरूरत होती। वे इस घटना को तीर्थयात्रा का पुण्यफल कहते थे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवजी कोढ़ी बने

एक बार पार्वती ने शिवजी से पूछा—"भगवन्! लोग इतना कर्मकांड करते हैं फिर भी इन्हें आस्था का लाभ क्यों नहीं मिलता?" शिवजी बोले—"धार्मिक कर्मकांड होने पर भी मनुष्य जीवन में जो आडंबर छाया है, यही अनास्था है। लोग धार्मिकता का दिखावा करते हैं, उनके मन वैसे नहीं हैं।" परीक्षा लेने दोनों धरती पर आए। माँ पार्वती ने सुंदरी साध्वी पत्नी का व शिवजी ने कोढ़ी का रूप धारण किया। मंदिर की सीढ़ियों के समीप वे पति को लेकर बैठ गईं। दानदाता दर्शनार्थ आते रहे व रुककर कुछ पल पार्वतीजी को देखकर आगे बढ़ जाते। बेचारे शिवजी को गिने-चुने कुछ सिक्के मिल पाए। कुछ दानदाताओं ने तो संकेत भी किया—"कहाँ इस कोढ़ी पति के साथ बैठी हो। इन्हें छोड़ दो।" पार्वतीजी सहन नहीं कर पाईं, बोलीं—"प्रभु! लौट चलिए अब कैलाश पर। सहन नहीं होता इन पाखंडियों का यह गंदा व्यवहार।" इतने में ही एक दीन-हीन भक्त आया, पार्वतीजी के चरण छुए और बोला—"माँ! आप धन्य हैं जो पतिपरायण हो इनकी सेवा में लगी हैं। आइए! मैं इनके घावों को धो दूँ। फिर मेरे पास जो भी कुछ सत्तू आदि है, आप हम साथ-साथ खा लें।" ब्राह्मण यात्री ने घावों पर पट्टी बाँधी, सत्तू थमा पुनः प्रणाम कर ज्योंही आगे बढ़ा वैसे ही शिवजी ने कहा—"यही है भार्ये एकमात्र भक्त, जिसने मंदिर में प्रवेश से पूर्व निष्कपट भाव से सेवा धर्म को प्रधानता दी। ऐसे लोग गिने-चुने हैं। शेष तो सब आत्म-प्रवंचना भर करते हैं व अवगति को प्राप्त होते हैं।" शिव-पार्वती ने अपने वास्तविक स्वरूप में उस भक्त को दर्शन दिए। परमगति का अनुदान दिया व वापस लौट गए।

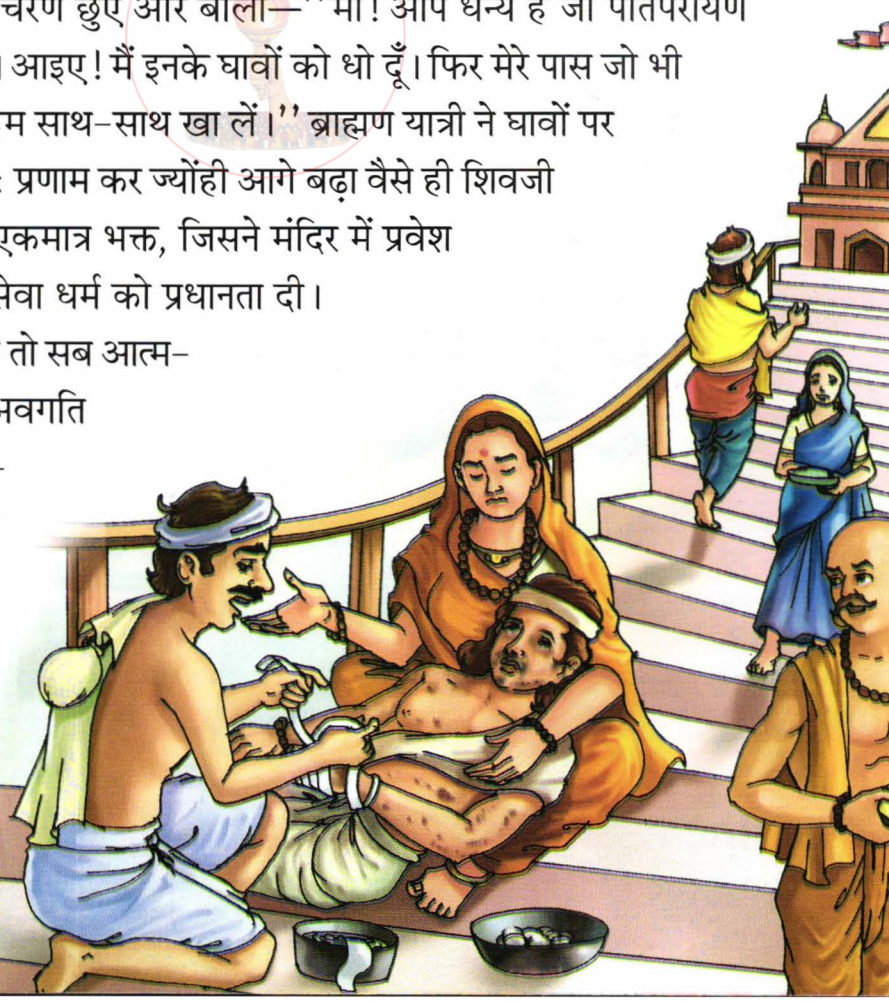

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संत की शिक्षा

एक अमीर ने किसी संत की बहुत सेवा की। उसकी सेवा से संत का जी भर आया। जब वे वहाँ से चलने लगे तो अमीर ने प्रार्थना की कुछ ऐसा उपहार देते जाइए, जिसके सहारे मैं भगवान तक पहुँच सकूँ।

संत ने उसे तीन चीजें दीं—(१) मोम, (२) सुई, (३) थोड़े से बाल, और कहा इन्हें गाँठ में बाँध लो। अमीर ने इन चीजों को देखा और अचंभे से पूछा—"इनके सहारे मैं कैसे भगवान से मिल सकूँगा?"

संत ने कहा—"मोमबत्ती की तरह खुद जलो और दूसरों के लिए रोशनी पैदा करो। सुई की तरह अपने को उघारा रखो पर दूसरों के छेद बंद कर दो। बालों की तरह मुलायम और लचीले रहो। ये तीन ही सहारे भगवान तक पहुँचने के हैं, सो इन्हें गाँठ बाँध लो, इनके सहारे भगवान तक पहुँच जाओगे।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पूजा-पाठ और कर्मकांड तो मन को एकाग्र करने के तरीके हैं। सच्चा ईश्वरभक्त तो वही है जिसने अपने मन और आचरण को पवित्र बना लिया है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कंबल ने पकड़ लिया

एक पति-पत्नी नदी के किनारे पर टहल रहे थे, तभी उन्हें नदी में एक कंबल बहता दिखाई दिया। व्यक्ति को लोभ आ गया और वह उसे निकालने कूद गया। तैराकी पर भरोसा था; सोचा जरा सी देर में ले आऊँगा; पर वह कंबल के साथ-साथ बहने-डूबने-उतराने लगा। पत्नी किनारे से चिल्लाई—"जल्दी से किनारे लग जाओ; यदि कंबल नहीं खिंचता, तो छोड़कर लौट आओ।"

पति चीखा—"मैं तो कब का लौट आता; पर कंबल की पकड़ से छूट नहीं पा रहा हूँ।" वास्तव में वह कंबल नहीं रीछ था। उसकी पकड़ से छूटना कहाँ संभव था। वासना, तृष्णा आदि को व्यक्ति इसी प्रकार अपने काबू में करने के भ्रम में पकड़ता है। काबू में न कर पाने पर छोड़ भागने का प्रयास करता है; परंतु फिर छूटना इसी प्रकार कठिन हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिंकन ने कीमत चुकाई

बालक अब्राहम लिंकन को महापुरुषों के जीवन-चरित्र पढ़ने का बहुत शौक था। गरीबी के कारण पुस्तकें खरीद तो नहीं सकते थे; पर जहाँ-तहाँ से माँगकर लाते, पढ़ते, लौटाते और अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करते थे। एक बार वे दस मील चलकर एक पुस्तक माँगकर लाए। रात को वर्षा हुई। छत टपकी और पुस्तक भीग गई। सुरक्षित लौटाने की शर्त कैसे निभेगी, लिंकन इस चिंता में डूबे जा रहे थे। नियत समय पर लौटाने पहुँचे पर साथ ही उसके खराब होने की बात भी कही। झंझट का फैसला यह हुआ कि लिंकन उन सज्जन के यहाँ इतने दिन मजदूरी करें, जितने में नई पुस्तक खरीदने जितना पैसा चुक जाए।

लिंकन खुशी-खुशी तैयार हो गए और पैसे चुकाकर वापस लौटे।

महामानव बनने के लिए बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है। जो पुरुषार्थी होता है वही एक दिन संसार का प्रेरणा-स्रोत बन जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घोड़ा लौटा दिया

अरब देश में दो मित्र रहते थे—नावेर और वहेर। वहेर के पास बड़ा शानदार घोड़ा था। नावेर उसे किसी भी तरीके से प्राप्त करना चाहता था। कोई और उपाय न दीखा तो एक दिन नावेर समुद्र के किनारे बीमार बुढ़िया का रूप बनाकर पड़ गया और रोने लगा। वहेर ने घोड़ा रोका और उस पर बीमार को बिठाकर खुद पैदल चलने लगा।

मौका मिल गया। बुढ़िया बने नावेर ने एड़ लगाई और घोड़े को ले भागा। वहेर को आश्चर्य भी हुआ और दु:ख भी। उसने जोर की आवाज लगाकर नावेर को खड़ा किया और पास जाकर कहा—"घोड़ा तुमने पा लिया, सो ठीक। पर इस घटना को किसी से न कहना, अन्यथा गरीब और बीमार की कोई सहायता कभी नहीं करेगा उन्हें भी धूर्त माना जाएगा।"

नावेर रास्ते भर दोस्त की बात पर विचार करता रहा और दूसरे दिन उसका घोड़ा लौटा दिया।

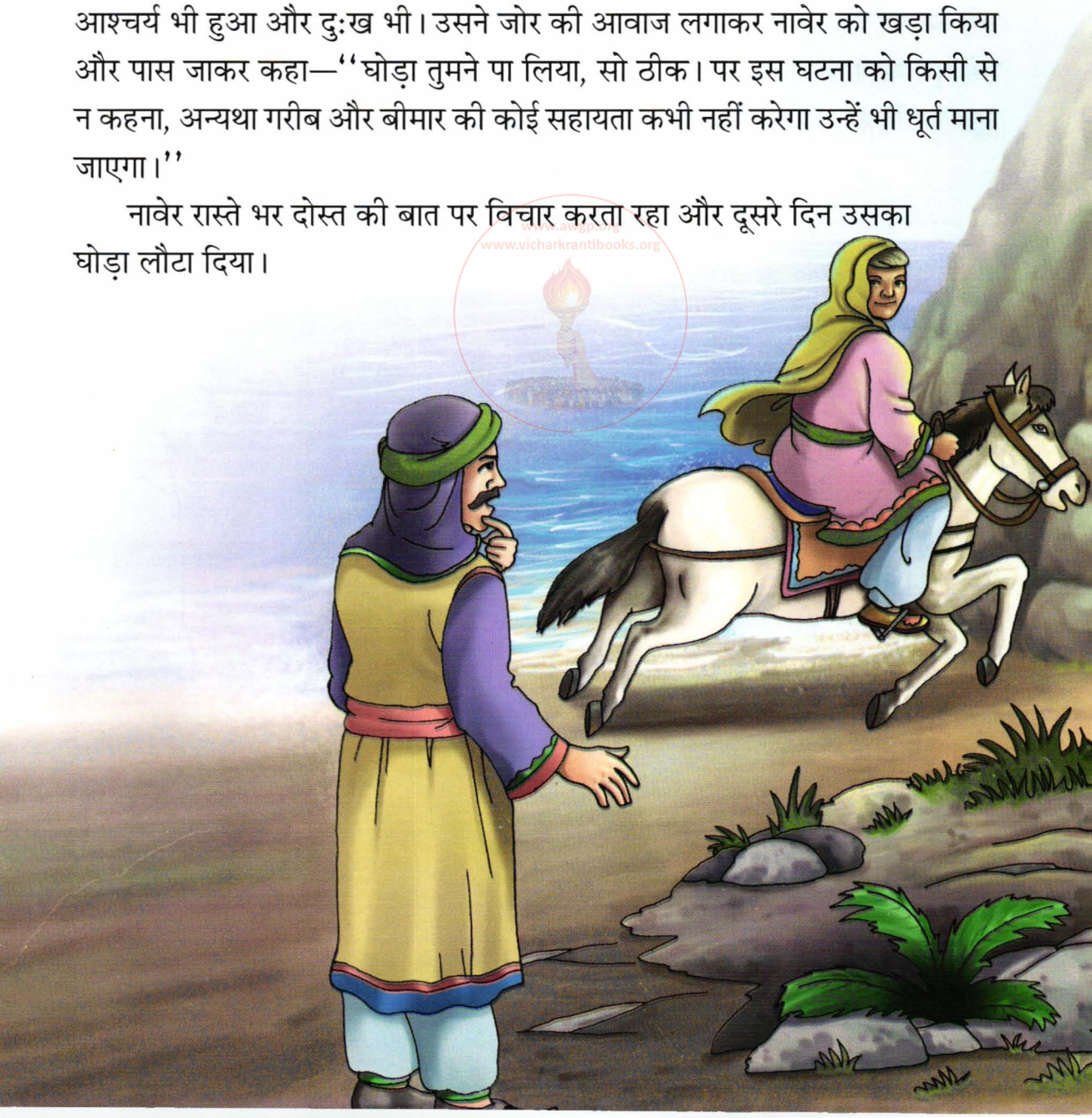

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सात घड़ा धन

मधुवर्त नामक वैश्य महाराज समुद्रदत्त के यहाँ नौकरी करता था। जितना मिलता था उसमें घर का अच्छा गुजर-बसर चलता था, बालक-बच्चे सभी सुखी थे। एक दिन मधुवर्त जंगल से गुजर रहा था तो एक पीपल के पेड़ से आवाज आई—"सात घड़ा धन लोगे।" मधुवर्त लालच में आ गया। उसने हाँ कर दी। अदृश्य आवाज ने कहा—"जाओ तुम्हारे घर पहुँचा दिए जाएँगे।" मधुवर्त घर लौटा तो पत्नी ने बताया कि सातों घड़े आ गए हैं। उसने सातों घड़े देखे। छह तो भरे थे एक आधा खाली था। मधुवर्त को उसे पूरा करने की चिंता सताने लगी। अब उसने अपना, बच्चों का सभी का पेट काटना शुरू कर दिया। फलतः स्वयं हो चला दुर्बल, बच्चे करने लगे उत्पात, पत्नी कभी उसकी

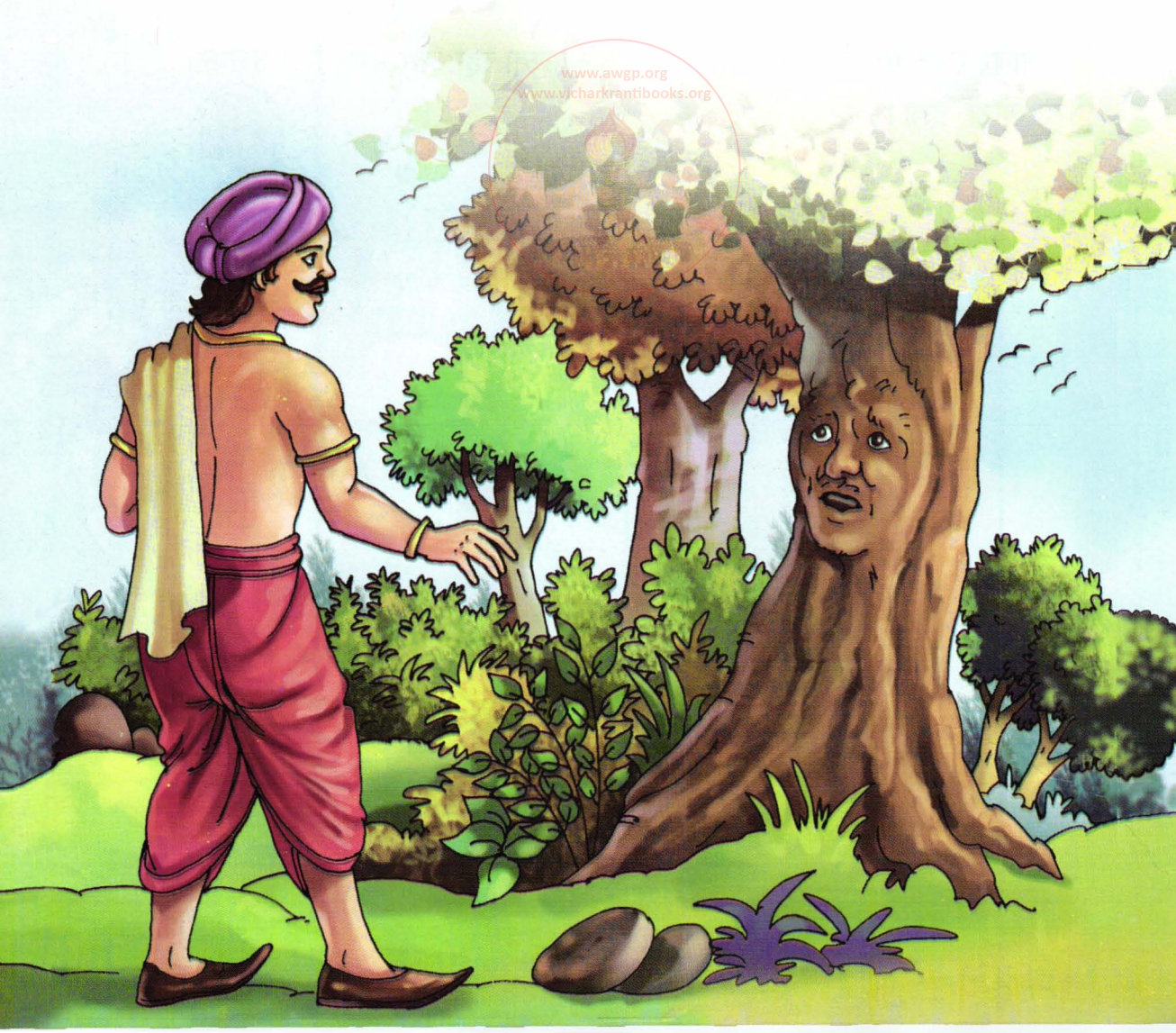

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरफ कभी बच्चों की तरफ। घर में हाहाकार मच गया। एक दिन इसी शोक में डूबे मधुवर्त को देखकर महाराज समुद्रदत्त ने पूछा—"कहीं तुम्हें यक्ष के सात घड़े तो नहीं मिल गए?" मधुवर्त ने कहा—"हाँ महाराज।" वे हँसकर बोले—"तुम्हारे दुःखों का वही कारण है, सुख चाहो तो उन्हें लौटा दो।" गलती समझ में आई तो मधुवर्त ने घड़े लौटाए और जितना भी कुछ अपने पास था उसी में गुजारा करने लगे।

थोड़े में ही गुजारा करने वाले सदा संतोषी और सुखी रहते हैं।

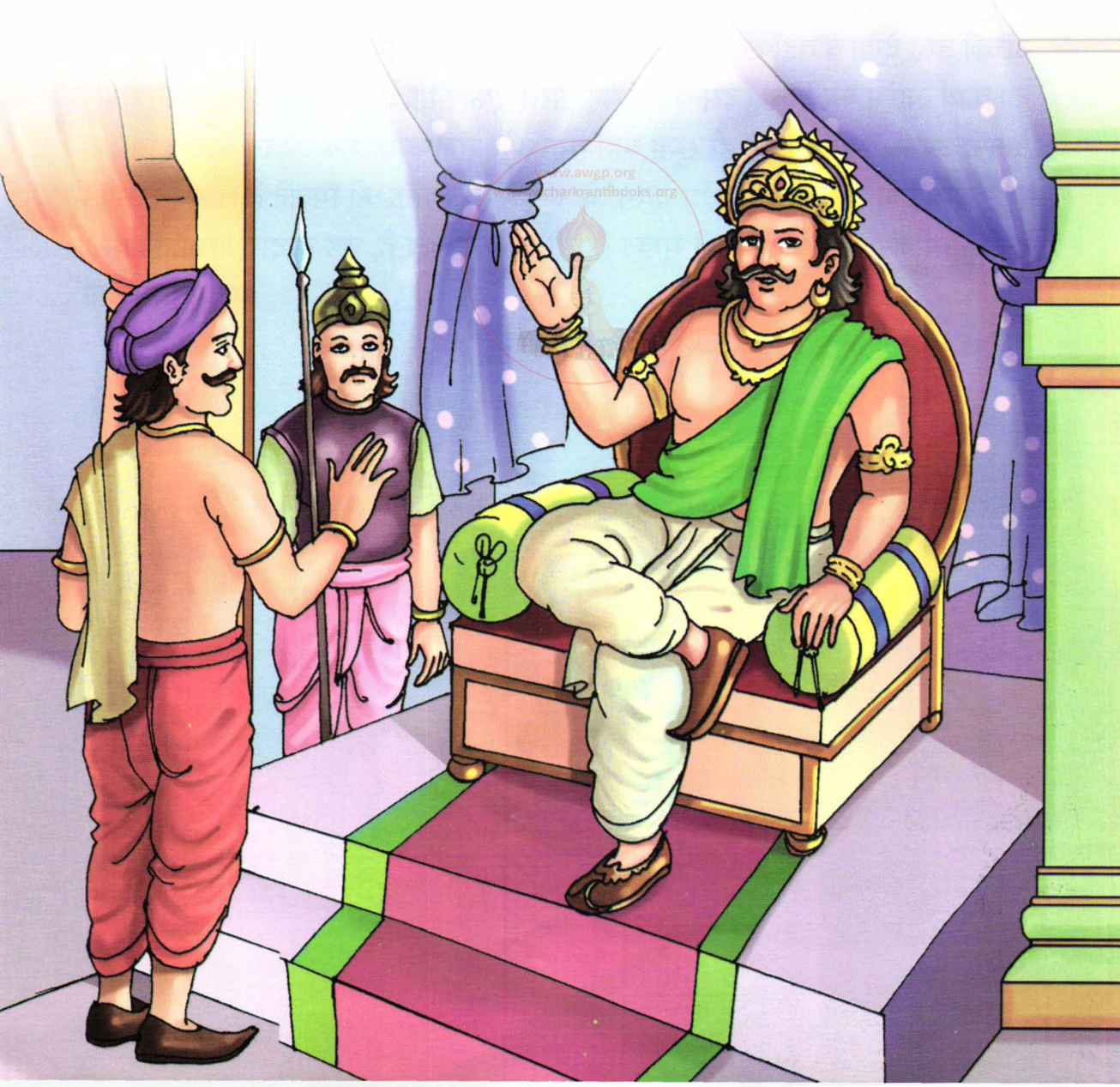

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूरदर्शी राजा

एक राज्य का यह नियम था कि जनसाधारण में से जो राजा चुनकर गद्दी पर बिठाया जाए उसे दस वर्ष बाद ऐसे एकाकी द्वीप में छोड़ दिया जाए, जहाँ अन्न-जल उपलब्ध न हो। कितने ही राजा इसी प्रकार अपने प्राण गवाँ चुके थे। जो अपना राज्यकाल बिताते थे उन्हें अंतिम समय में अपने भविष्य की चिंता दुखी करती थी, तब तक समय आ चुका होता था।

एक बार एक बुद्धिमान व्यक्ति जान-बूझकर उस समय गद्दी पर बैठा जब कोई भी उस पद को लेने के लिए तैयार न था। उसे भविष्य का ध्यान था। उसने उस द्वीप को अच्छी तरह देखा व वहाँ खेती कराने, जलाशय बनाने, पेड़ लगाने तथा व्यक्तियों को बसाने का कार्य आरंभ कर दिया। दस वर्ष में वह नीरव एकाकी प्रदेश अत्यंत रमणीक बन गया। अपनी अवधि समाप्त होते ही राजा वहाँ गया और सुखपूर्वक शेष जीवन व्यतीत किया।

जीवन के थोड़े दिन 'स्वतंत्र चयन' के रूप में हर व्यक्ति को मिलते हैं। इसमें वर्तमान का सुनियोजन और भविष्य की सुखद तैयारी जो कर लेता है, वह दूरदर्शी राजा की तरह सुखपूर्वक जीता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्याग का सम्मान

एक व्यक्ति बहुत ही कंजूस था। वह इतना कंजूस था कि अपने आप पर भी धेला खरच नहीं करता था। लाखों का स्वामी था पर फटे कपड़े पहने रहता। केवल एक अच्छी बात थी उसमें। वह सत्संग में जाता था। सबसे अंत में जूतों के पास बैठ जाता और कथा सुनता रहता। चढ़ावे का दिन आया, तो भेंट चढ़ाने के लिए सब कोई न कोई वस्तु लाए। वह कृपण भी मैले रूमाल में कुछ बाँध के लाया। सब लोग अपनी लाई वस्तु रखते गए, वह भी आगे बढ़ा अपना रूमाल खोल दिया उसने। उसमें अशरफियाँ और सोना था। इन्हें पंडित जी के समक्ष उँड़ेलकर वह जाने लगा। पंडित जी ने कहा—"नहीं नहीं सेठ जी! वहाँ नहीं मेरे पास बैठो।"

सेठ जी ने बैठते हुए कहा—"यह तो रुपयों का सम्मान है पंडित जी मेरा सम्मान तो नहीं?" पंडित जी ने कहा—"भूलते हो सेठ जी! रुपये तो तुम्हारे पास पहले भी थे। यह तुम्हारे रुपये का नहीं, तुम्हारे त्याग का सम्मान है। आगे भी ऐसा ही व्यवहार करोगे, तो बदले में यही पाओगे।"

धन का सच्चा उपयोग तभी है जब वह समाज के हित में लगे। सेठ ने पंडित जी के सत्संग में प्रतिदिन आकर यह बात भली-भाँति हृदयंगम कर ली थी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतोष धन बड़ा है

एक व्यक्ति एक संत के पास आया व उनसे याचना करने लगा कि वह निर्धन है। वे उसे कुछ धन आदि दे दें, ताकि वह जीविका चला सके। संत ने कहा—"हमारे पास तो वस्त्र के नाम पर यह लँगोटी व उत्तरीय है। लँगोटी तो आवश्यक है पर उत्तरीय तुम ले जा सकते हो। इसके अलावा और कोई ऐसी निधि हमारे पास है नहीं।" वह व्यक्ति बराबर गिड़गिड़ाता ही रहा तो वे बोले—"अच्छा, झोंपड़ी के पीछे एक पत्थर पड़ा होगा। कहते हैं, उससे लोहे को छूकर सोना बनाया जा सकता है। तुम उसे ले जाओ।" प्रसन्नचित्त वह व्यक्ति भागा व उसे लेकर आया, खुशी से चिल्ला पड़ा—"महात्मन्! यह तो पारसमणि है। आपने इसे ऐसे ही फेंक दी।"

संत बोले—"हाँ बेटा! मैं जानता हूँ और यह भी कि यह नरक की खान है। मेरे

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

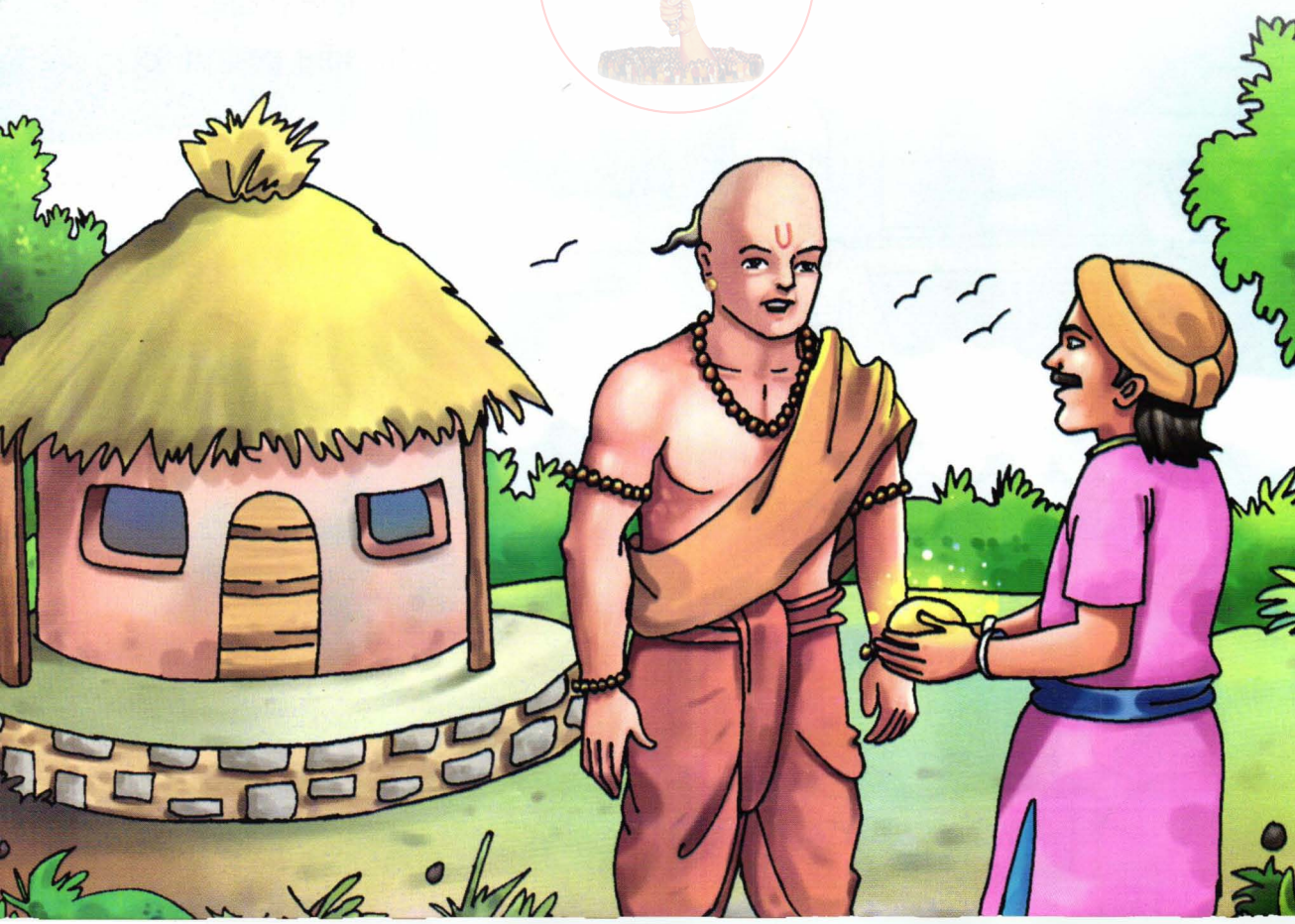

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पास प्रभु कृपा से आत्मसंतोष रूपी धन है जो मुझे निरंतर आत्मज्ञान तथा और अधिक ज्ञान प्राप्त करने को प्रेरित करता है। मेरे लिए इस क्षणिक उपयोग की वस्तु का क्या मूल्य ?'' वह व्यक्ति एकटक देखता रह गया।

फेंक दी उसने भी पारस मणि। बोला—''भगवन्! जो आत्मसंतोष आपके पास है व जो कृपा आप पर बरसी है उससे मैं इस 'पत्थर' के कारण वंचित नहीं होना चाहता। आप मुझे भी उस दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दें, जो सीधे प्रभुप्राप्ति की ओर ले जाती है।'' संत ने उसे शिष्य के रूप में स्वीकार किया। उसे भी वह ज्ञान दिया जो आत्मसंतोष देता है।

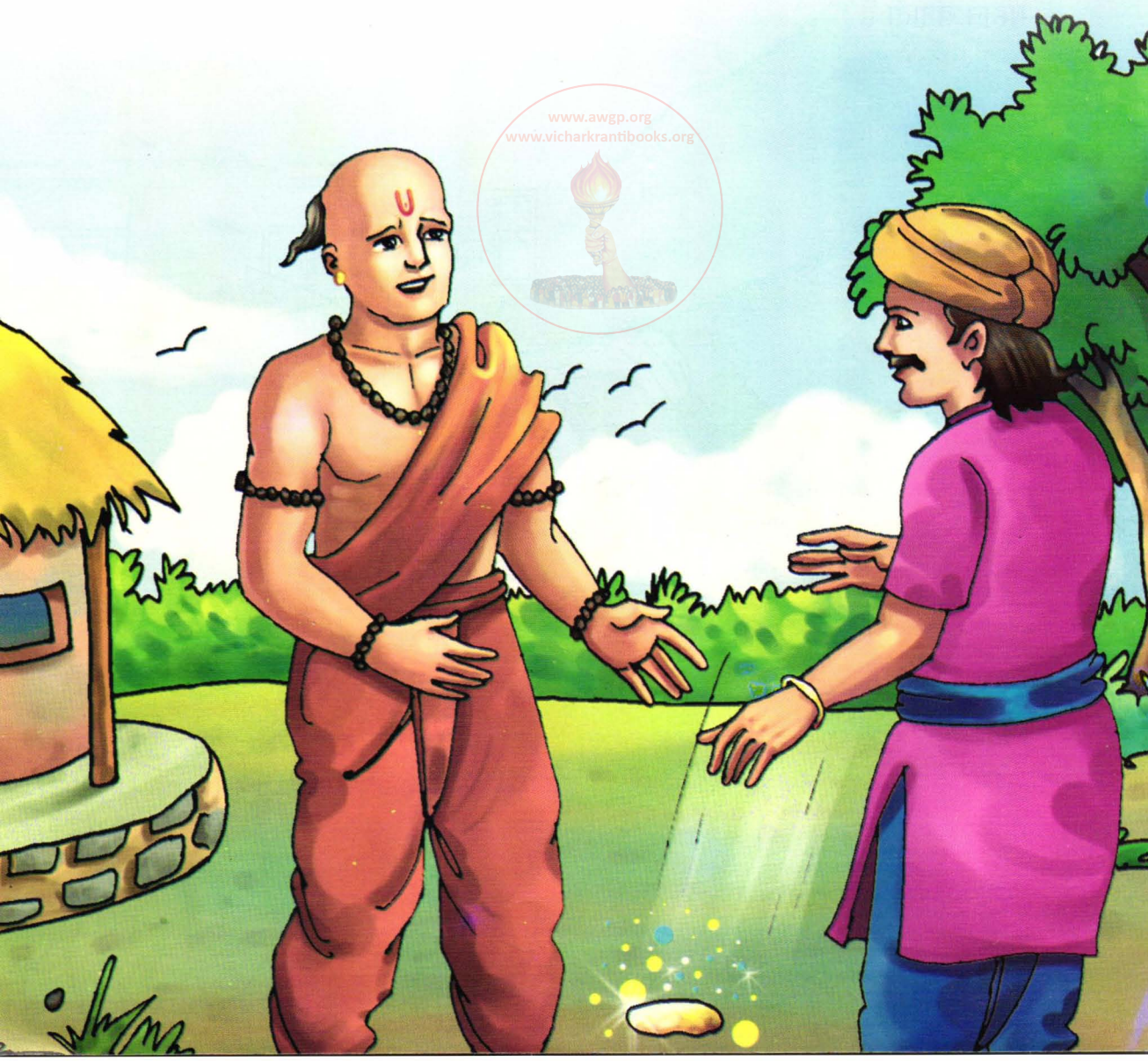

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लापरवाही सहन नहीं

गांधी जी के जीवन की घटना है। एक बार मद्रास में एक छोटा बच्चा गांधी जी को आग्रहपूर्वक एक छोटी पेंसिल लिखने के लिए दे गया। उन्होंने कई दिन उसी से लिखा। एक दिन वह पेंसिल कहीं खो गई। गांधी जी ने सारा सामान ढूँढ़ डाला। वे तभी चैन से बैठे, जब पेंसिल खोज ली।

वे कहते थे—"मैं बच्चे की भावना के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकता और न लापरवाही को बढ़ने दूँगा, चाहे वह मेरी ही क्यों न हो। मेरी आज की तनिक सी लापरवाही कल बहुत बड़ा रूप ले सकती है।" ऐसी छोटी-छोटी आदतें ही व्यक्ति को महान बनाती हैं।

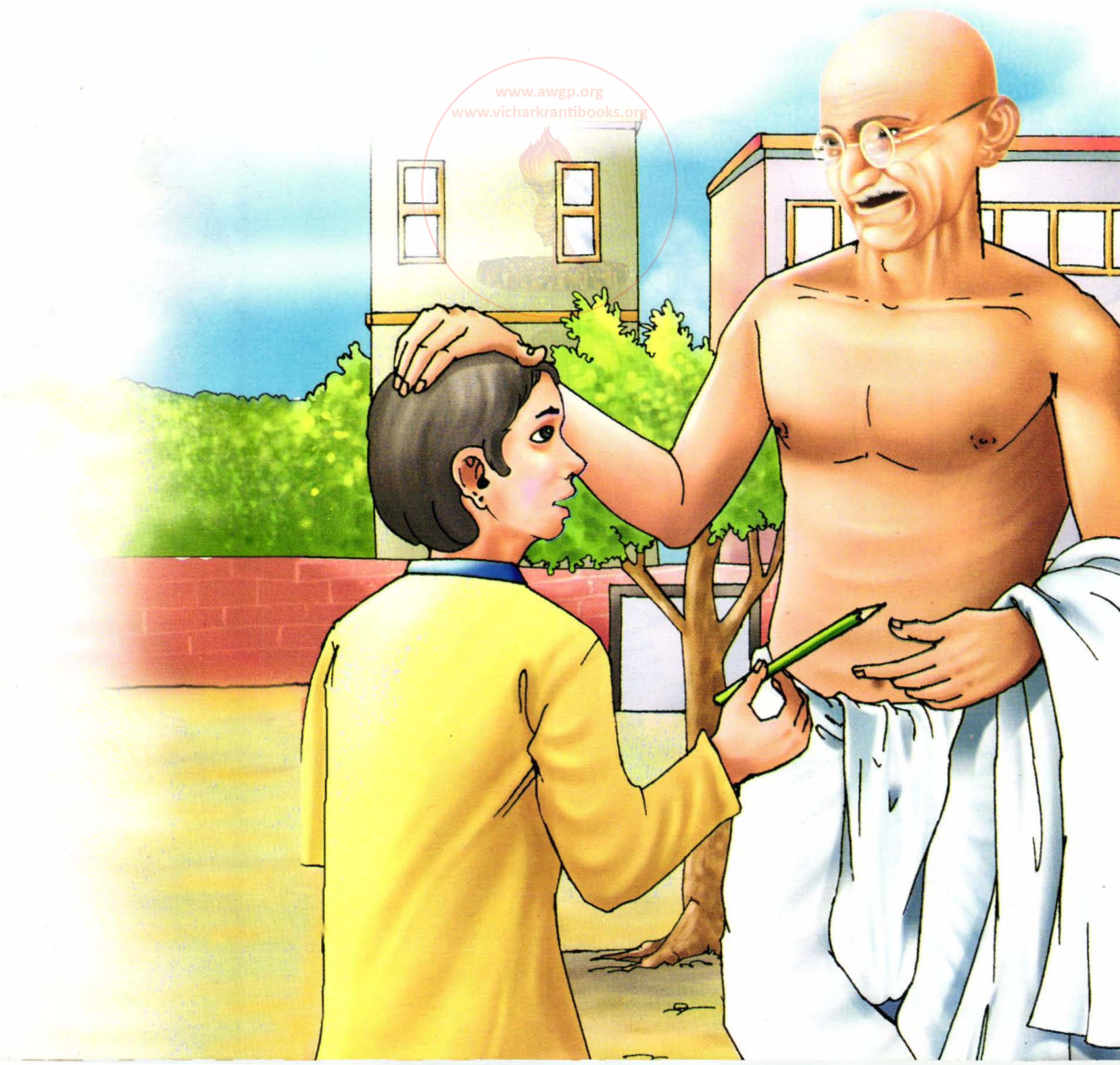

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझ की परख

एक पिता के दो लड़के थे। एक दिन पिता ने दोनों की समझ परखने के लिए लड़कों को दस-दस रुपये दिए और कहा—"इनकी ऐसी वस्तु खरीद लाओ जो फर्श से छत तक जा पहुँचे।"

एक लड़का भूसा खरीद लाया और दूसरा लड़का एक बढ़िया लालटेन लाया। एक लड़के ने अपनी लालटेन जलाई, उसके प्रकाश से पूरा कमरा बहुत दिनों तक प्रकाशित रहा। फर्श से छत तक रोशनी भरी रही। एक लड़का जो भूसा लाया था, वह कुछ दिनों में सड़ गया तो उसे फिंकवाने में और पैसा खरच करना पड़ा।

इस प्रकार पिता ने बुद्धिमान और मूर्ख की पहचान की और अपनी संपत्ति लालटेन लाने वाले लड़के को दी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

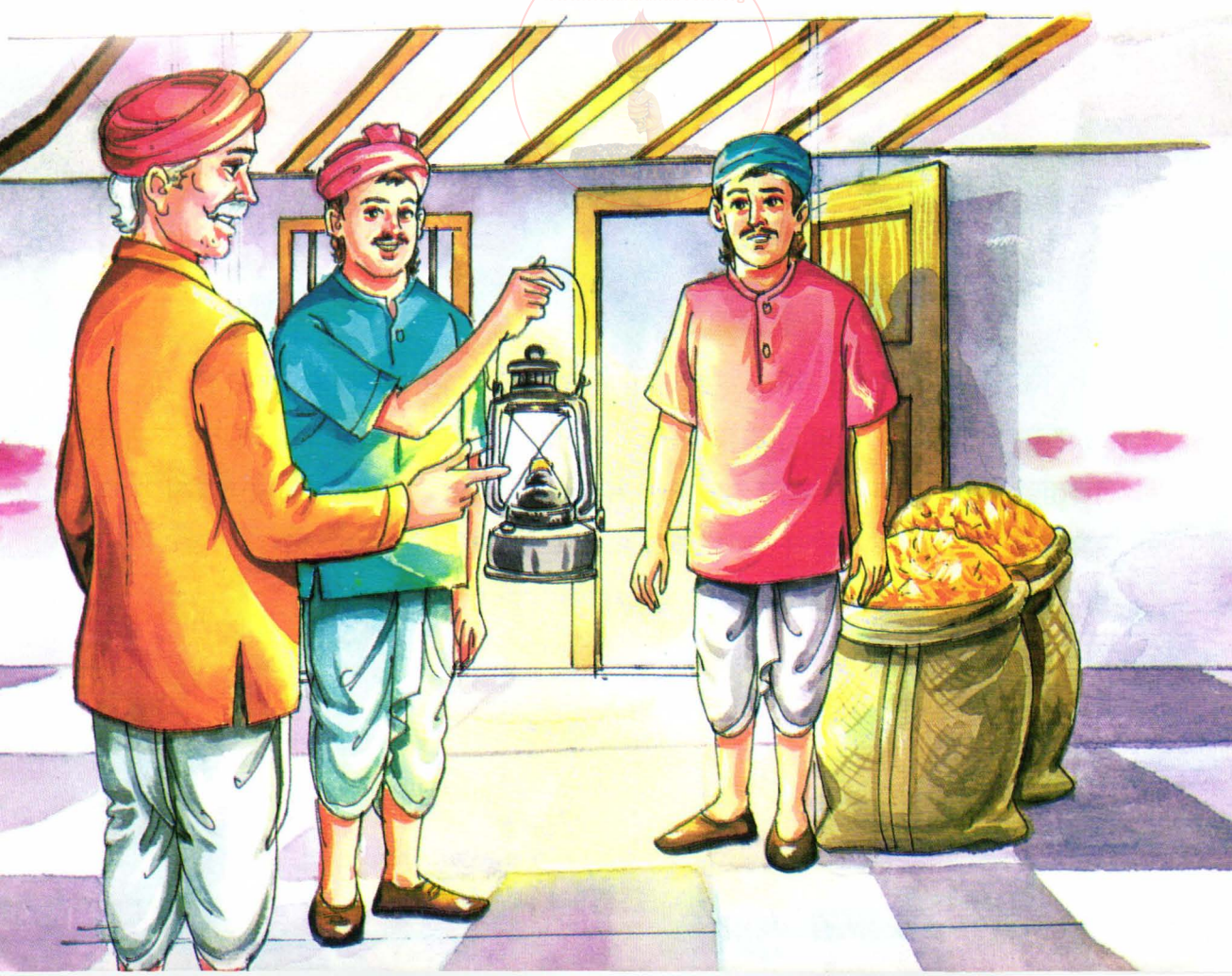

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हवलदार पद्मा

ग्वालियर में एक फौज में बहुत से सिपाही थे। उसी फौज में एक पद्मा नामक औरत हवलदार हो गई। उसका भाई था जोरावर। वह साहूकारों का कर्ज न दे पाने के कारण जेल चला गया था। घर की हालत बहुत खराब हो गई थी। गरीबी से तंग आकर पद्मा ने पुरुष का वेश बनाया और फौज में भरती हो गई। बहुत दिन वह साधारण सिपाही के रूप में रही, फिर अपनी विशेषताओं के कारण हवलदार बन गई और धीरे-धीरे अपने भाई का कर्ज चुकाने लगी।

किसी प्रकार नहाते-धोते उसे किसी ने देख लिया कि यह एक औरत है और बात खुल गई। किसी ने राजा तक शिकायत पहुँचा दी। उसने हवलदार स्त्री को बुलाकर पूछताछ की तो पद्मा ने सारी बात कह सुनाई। सिंधिया के राजा उसकी वीरता से बड़े प्रभावित हुए। उसके भाई का सारा कर्ज खजाने से चुका दिया गया और पद्मा का विवाह फौज के एक ऊँचे अफसर के साथ हो गया। नारी में सभी गुण काफी मात्रा में होते हैं। हमारे भारत की नारियाँ वीरता में भी किसी से पीछे नहीं रहीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org